Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A semester - 1 Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

"अख्यातिवाद"

SEPTEMBER WEEK 38 2020
17 THURSDAY 261-105

(अ) अख्यातिवाद मीमांसकों का मत है। मीमांसक वस्तुवादी हैं। वे ज्ञान को स्वतः प्रामाण्य मानते हैं किन्तु तब तो भ्रम होना ही नहीं चाहिए किन्तु भ्रम होता है इससे इनकार नहीं किया जा सकता। रस्सी में सर्प और सीप में चाँदी का भ्रम लोगों को कई बार होता है। यदि जो कुछ दिखाई देता है वह सत्य है तब रस्सी में साँप का दिखना भ्रम नहीं कहा जा सकता। इसकी व्याख्या कैसे हो? इसे लेकर मीमांसकों में दो मत है। प्रभाकर का मत और कुमारिल भट्ट का मत।

अख्यातिवाद प्रभाकर का मत है। प्रभाकर यहाँ कहते हैं कि भ्रम वास्तव में एक प्रकार का ज्ञान ही है। इसमें दोष केवल यह है कि यह अपूर्ण ज्ञान है, आंशिक ज्ञान है। वस्तुतः सारा ज्ञान यथार्थ होता है पर पूर्ण नहीं होता इस तरह इनके अनुसार प्रमा और अप्रमा में भेद तात्विक नहीं मात्रात्मक है। प्रमा समग्र ज्ञान है जबकि अप्रमा (भ्रम) आंशिक और अपूर्ण ज्ञान है। इस तरह वे भ्रम को मिथ्या ज्ञान नहीं कहते, अपूर्ण ज्ञान कहते हैं।

भ्रम की उत्पत्ति का कारण - यहाँ प्रश्न उठता है कि

M	T	W	T	F	S	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

आखिर यह क्यों होता है? प्रभाकर के अनुसार भ्रम एक ज्ञान नहीं दो ज्ञान है, एक प्रत्यक्ष ज्ञान और दूसरा स्मृति ज्ञान। इनमें विषय भी दो होते हैं। भ्रम में वस्तुतः इन अलग-अलग विषयों का भेद नहीं होता बल्कि दोनों का सम्मिश्रण हो जाता है। जैसे, शुक्ति रजत भ्रम में शुक्ति और रजत ये दो विषय हैं। शुक्ति (सीप) में रजत का भ्रम इसलिए होता है क्योंकि कहीं कभी देखी गई चाँदी (स्मृति) का सम्मिश्रण हम अभी प्रत्यक्ष दिखने वाली सीप में कर रहे हैं। यह गड़बड़ी हमारे स्मृति-दोष के कारण होती है। दूसरे शब्दों में, भ्रम स्मृति-दोष के कारण उत्पन्न भेद-ज्ञान का अभाव (विवेकाग्रह) है। यह हमारा अविवेक है। भ्रम वस्तुतः सत्य ज्ञान का अभाव है, यह अख्याति (अज्ञान) है, मिथ्या ख्याति नहीं।

इस तरह प्रभाकर के अनुसार हमें मिथ्या ज्ञान होता ही नहीं है, हमारी अनुभूति मिथ्या नहीं होती, वह अपूर्ण हो सकती है।